शोध-सारांश

वर्तमान गद्य साहित्य में कहानी और दलित कहानी में विशेष अंतर नहीं है किन्तु विषय वस्तु शिल्प, पात्रों का चयन, मूल्य और सिद्धांतों की दृष्टि से इनमें कई विभिन्नताएं हैं। हिंदी दलित कहानी क्षेत्र में विविध प्रकार की कहानियों का विकास हुआ है - भाव प्रधान, घटना प्रधान, चरित्र प्रधान, वातावरण प्रधान आदि। दलित कहानियों में ज्यादातर घटना प्रधान विषय को ही आधार बनाया गया है। हिंदी साहित्य के क्षेत्र में अनेक दलित हस्ताक्षरों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है जिसमे 'रत्नकुमार संभारिया' का विशिष्ट स्थान है। उनकी कहानियों में मानवीय संवेदना व दलितों के प्रति सहानुभूति देखने को मिलती है जो समाज में नव चेतना जागृत करती है। सांभरिया जी की कहानियों की विषय-वस्तु भले ही दलित चेतना या दलित परिवेश की है, मगर वे इसे अपनी रचनाओं में सीधे-सीधे सम्प्रेषित नहीं करते। लेकिन जब उनकी कहानियों में पात्रों का आक्रोश या उनका प्रतीकात्मक भाव सामने आता है तो सामने वाले की विवशता, लाचारी, घुटन, व असहायपन देखते ही बनता है। ऐसें भाव की अभिव्यक्ति ही सफल रचनाकार की पहचान है।

सांभरिया जी की कहानियों की एक विशेषता यह है कि उनके पात्र शोषण का शिकार होने के बाद कहानी के अंत तक इसका प्रतिरोध जरूर करते हैं या प्रतिरोध की योजना जरूर बनाते हैं। संग्रह में 'बकरी के दो बच्चे', 'आखेट', 'शर्त', 'झंझा', 'डंक', 'बात', 'मुक्ति', 'बदन-दबना' आदि दलित प्रतिरोध की कहानियां हैं।

वहीं मराठी भाषा के दलित चिंतक व साहित्यकार 'बाबूराव बागुल' अपनी कहानियों में चिंतनपरक साहित्य-सर्जन से दलित साहित्य को विस्तृत आधार तथा नई दृष्टि के साथ-साथ नई जमीन तैयार की है। वे अपने वर्ग के प्रतिबद्ध रचनाकार है जिन्होंने दलित जीवन की पीड़ा को सचेत तौर पर

अभिव्यक्त किया है। उन्होंने लिखा भी है कि "मैंने दलितों की दुनिया अपने सिर पर रण की है, इसलिए मेरा लेखन दलित लेखन है।"

दलित कहानियों में और विशेषकर हिंदी में दलित-उत्पीडऩ व बदहाली के केन्द्र गाँव रहे हैं, लेकिन बाबूराव बागुल की कहानियों में दलित आबादी का शहरी व महानगरीय अनुभव व्यक्त हुआ है।

"डा. भीमराव आम्बेडकर" ने भारतीय गाँवों को उत्पीडन-शोषण का केन्द्र मानते हुए इससे बचने के तौर पर शहरों में जा बसने का आह्वान किया था। जब बाबूराव बागुल की कहानियाँ महानगरों में दलितों की दुर्दशा की कहानी कहती हैं तब वही मध्यवर्गीय जीवन को उभरने के लिए उन्होंने 'विद्रोह', 'जब मेने जात छुपाई', 'मरना सस्ता हो गया है', 'रस्तेवाली', 'स्पर्धा', 'शिक्षा', 'गुंडा', 'बोव्हाडा', आदि कहानियों में साहित्य से बिल्कुल अपरिचित दुनिया का परिचय दिया है।

प्रस्तुत शोध के माध्यम से यह देखा गया है की समाज में जाति भेद की मानसिकता क्यों बनी हुई है, इसके पीछे क्या कारण रहे है साथ ही वर्तमान समय में दलित कहानियों में दलित चेतना का विकास किस तरह हो रहा है तथा सदियों से चली आ रही इस विभाजन का समाधान समाजशास्त्री चिंतक, राजनितिक चिंतक और साहित्यकार कैंसे खोजते रहे है इसके साथ-साथ आज दलित अस्मिता की जरुरत क्यों है इस पर भी ध्यान केन्द्रित करने का प्रयास किया गया है, अतः प्रस्तुत लघु शोध के माध्यम से मैंने अपनी व्यवहार कुशलता से दोनों लेखक की सामाजिक पृष्ठभूमि को रेखांकित करते हुए उनकी कहानियों में दलित चेतना का अध्ययन तुलनात्मक दृष्टिकोण से किया गया है।